"गेहूँ"

भूमि का चयन एवं खेत की तैयारी :–

- गेहूं उत्पादन के लिए मध्यम से भारी दोमट भूमि उपयुक्त होती है जिसका पी.एच. मान 6.5 से 8.0 के मध्य होना चाहिए।
- सिंचित क्षेत्र में खरीफ फसलों की कटाई के तुरंत बाद 1 से 2 बार कल्टीवेटर द्वारा आड़ी खड़ी जमीन की जुताई करे। उसके एक सप्ताह बाद पलेवा देकर बतर आने पर कल्टीवेटर द्वारा 1–2 बार जुताई करके पाटा चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा बनाये।

उन्नत किस्में :–

- **सिंचित एवं समय से बुआई के लिए** – जी.डब्ल्यू.–322, जी.डब्ल्यू.–273, जी.डब्ल्यू.–366, एच.आई.–1544, जे.डब्ल्यू.–1203, जे.डब्ल्यू.–1202, एच.डी.– 2932 (पूसा–111), एम.पी.– 3336
- **सिंचित कठिया (ड्यूरम) किस्में** – जे.डब्ल्यू.–1106, एच.आई.–8381 (मालवश्री), एच.आई.–8498 (मालव शक्ति), जे.डब्ल्यू.–1215, एच.आई.–8627 (मालव कीर्ति), एच.आई.–8663 (पोषण)
- **अर्द्धसिंचित स्थिति के लिए** – एच.आई.–1531 (हर्षिता), जे.डब्ल्यू.–3020, जे.डब्ल्यू.–3211, जे.डब्ल्यू.–3173, एम.पी.– 3269, जे.डब्ल्यू.–3288
- **पछेती बोनी के लिए** – जी.डब्ल्यू.–173, जे.डब्ल्यू.–1202, एच.डी.–2932 (पूसा–111), डी.एल.–788–2 (विदिशा), एच.आई.–1418 (नवीन चंदोसी), एम.पी.– 3336

बुआई का समय :–

- **अर्धसिंचित दशा में** – 15 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक
- **सिंचित समय से** – 10 नवम्बर से 25 नवम्बर तक
- **सिंचित देरी से** – 25 नवम्बर से 5 दिसम्बर तक

बीज दर :–

- बुआई हेतु 125 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर प्रयोग करे।

बीजोपचार :–

- बीजोपचार कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम या थायरम 2 ग्राम + कार्वेन्डाजिम 1 ग्राम (कुल 3 ग्राम दवा) प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से करना चाहिये।
- कण्डवा ग्रसित क्षेत्रों में बीजोपचार हेतु वीटावेक्स 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीजदर प्रयोग करें।
- बोनी पूर्व एजोटोबेक्टर 10 ग्राम एवं पी.एस.बी. 10 ग्राम कल्चर से प्रति किलो बीज उपचारित करें।
- दीमक प्रभावित क्षेत्रों में कीटनाशक दवा क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 5 मि. ली. प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से बीजोपचार करना लाभप्रद हैं।

बुवाई की विधि :–

- सीधे कतारों में बुआई के लिए बीज की मात्रा 125 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर सें प्रयोग करें।
- कतार से कतार की दूरी 22 से 23 से.मी. होनी चाहिये।
- पछेती बोनी की अवस्था में बीज की मात्रा 150 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर एवं कतार से कतार की दूरी 18 से.मी. रखना चाहिये।
- 4 से 5 से.मी. से अधिक गहराई पर बीज नहीं बोना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :–

- संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरको का प्रयोग करें।
- गोबर की खाद 100 से 150 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपयोग करें।
- सिंचित समय से बोनी हेतु 120 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. स्फुर एवं 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर का प्रयोग करें।
- नत्रजन 1/2 मात्रा ,स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा शेष नत्रजन दो बराबर भागों में पहली एवं दूसरी सिंचाई के समय दे।
- भूमि में जस्ते की कमी होने पर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हैक्टेयर का प्रयोग चार फसल बाद दोहरायें।

सिंचाई प्रबंधन :–

- हरदा जिले में कृषक गेहूँ की खेती भारी भूमि में करते है इसमें 2 से 3 सिंचाई की आवश्यकता होती हैं। खेत में पट्टी बनाकर सिंचाई करें। पानी बहाकर सिंचाई न करें।
- प्रथम सिंचाई बोनी के 22 से 25 दिन में करें।
- द्वितीय सिंचाई बोनी के 50 से 55 दिन में करें।

- तृतीय सिंचाई बोनी के 80 से 85 दिन में करें।

खरपतवार नियंत्रण :–

- पेन्डीमिथैलिन 38.7 प्रतिशत (स्टाम्प एक्सट्रा) 1750 मि.ली. दवा को 500–600 ली. पानी में घोल कर बुवाई के 2 से 3 दिन के भीतर छिड़काव करें। वार्षिक घास कुल एवं कुछ चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम में उपयुक्त है।
- गेहूँ की फसल में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण हेतु मेटसल्फ्यूरॉन 8 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर बोने के 25 से 30 दिन बाद छिड़काव करें।
- संकरी पत्ती जई एवं गेहूँसा के नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरॉन 25 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बोनी के 30 से 35 दिन बाद छिड़काव करें।
- घासकुल चौड़ी पत्ती एवं मोथा के प्रभावी नियंत्रण के लिए सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 प्रतिशत + मेटसल्फ्यूरॉन 5 प्रतिशत डब्ल्यू. जी. (टोटल) 32 ग्राम सक्रिय तत्व 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बोनी के 25 से 30 दिन बाद छिड़काव करें।
- बोनी के 35 दिन पश्चात किसी भी नींदानाशक का प्रयोग नहीं करें।

कीट नियंत्रण :–

- **दीमक** – दीमक का प्रकोप असिंचित गेहूँ पर सम्पूर्ण अवधि में होता हैं। नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस कीटनाशक 5 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से बोनी के पूर्व मिट्टी में छिड़काव करें। इससे कटुआ इल्ली की भी रोकथाम होगी।
- **जड़ माहों** – कीट पौध एवॅ कंसावस्था में जड़ो से रस चूसकर नुकसान पहुँचाता है। इसके नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफॉस 4 से 5 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से दवा को सिंचाई जल के साथ दे।

रोग नियंत्रण :–

- **कण्डवा रोग** – रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जला देना चाहिये।
  रोगरोधी जातियों को लगाना चाहिये। जैसे एच.आई–1544, जी.डब्ल्यू. –322, जी.डब्ल्यू.–366, जी.डब्ल्यू.–273, एच.आई–8498
  बोने के पहले बीज को कार्बोक्सिन (वीटावेक्स) 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज

की दर से उपचार करें।

- **करनाल बंट –**
  जिस खेत में रोग लगा हो उस खेत में 2 से 3 वर्षो तक गेहूँ नहीं बोना चाहिये।
  बोने से पहले बीज को फफूंदनाशक दवा से उपचारित करना चाहिये।
  धब्बो के दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनेजोल 500 मि.ली. दवा को 500 लीटर पानी में घोल तैयार कर प्रति हेक्टेयर 1 या 2 बार पत्तियों पर छिड़काव करें।

- **गेरुआ –**
  रोगरोधी जातियॉ लगायें जैसे – एच.आई.–1500, एच.आई.–8498, जी.डब्ल्यू.– 322, जी.डब्ल्यू.–366
  उर्वरको का संतुलित मात्रा में प्रयोग कर फसल को समय पर बोना चाहिए।
  पत्तियों पर हल्के धब्बे दिखाई देने पर प्रॉपिकोनाजोल 500 एम.एल. दवा को 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें या मेन्कोजेव या जिनेव की 1500 ग्राम दवा प्रति हेक्टेयर को 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

उपज :–

- गेहूं की उन्नत किस्मों से 45 से 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती हैं।